दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 16.12.2022

प्रकाशनार्थ

चुनौती मिलने पर शत्रु को पराजित करने की क्षमता रखने वाली सेना ही सशक्त होती है-कर्नल बी.पी.शाही

दिनांक 16.12.2022 गोरखपुर। महाविद्यालय के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग द्वारा विजय दिवस के अवसर पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें **मुख्य अतिथि कर्नल बी.पी.शाही, निदेशक, एच.पी.डिफेन्स एकेडमी** ने अपने उद्बोधन में भारत– पाक युद्ध 1971 में पूर्वी पाकिस्तान के नागरिकों के मुक्ति अभियान के योगदान पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि आज भी बांग्लादेश के लोग भारत द्वारा किये गये इस उपकार को मानते हैं। कर्नल शाही ने आगे कहा कि आज वर्तमान में वही राष्ट्र या सेना शक्तिशाली मानी जाती है जो अपनी भूमि पर अधिकार बनाये रखती है तथा चुनौती मिलने पर शत्रु को पराजित करने की क्षमता रखती हैं। इस सन्दर्भ में उन्होंने रूस–यूक्रेन युद्ध का उदाहरण देते हुए कहा कि रूस ने कितना ही आधुनिक हथियारों का प्रयोग क्यों न कर लिया परन्तु यूक्रेन की धरती पर कब्जा नहीं कर पा रहा है। वहीं 1971 के युद्ध में भारतीय थल सेना ने पूरे पूर्वी पाकिस्तान पर अधिकार करके मात्र 14 दिनों मे ही निर्णायक विजय प्राप्त की थी। उन्होंने छात्र–छात्राओं को देश व समाज में उनकी सैनिकों की भूमिका एवं महत्व को बताते हुए सेना से जुड़कर विजय दिवस की सार्थकता को सिद्ध करने का आह्वान किया।

विशिष्ट अतिथि डॉ. बलवान सिंह पूर्व विभागाध्यक्ष, भटवली महाविद्यालय, भटवली बाजार, ऊनवल, गोरखपुर ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज हम इस दिन को विजय दिवस के रूप में इसलिए मना रहे है कि आज ही के दिन भारत ने पूर्वी पाकिस्तान में लगभग 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों को आत्मसमर्पण करने के लिए बाध्य कर दिया था, यह पहला मौका था जब भारत की तीनों सेनाओं ने अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हुए अभूतपूर्व शौर्य का प्रदर्शन किया, जिसका परिणाम यह रहा कि एक नवीन राष्ट्र बांग्लादेश का उद्भव हुआ। इस युद्ध में भारतीय सेनाओं के साथ–साथ भारत का शीर्ष नेतृत्व ने भी अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ सेनाओं के साथ खड़ा रहा। जिसके परिणाम स्वरूप भारत के इस युद्ध में सफलता प्राप्त हुई और पाकिस्तान दो हिस्सों में विभाजित हो गया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) ओम प्रकाश सिंह ने 1971 के युद्ध के कारणों पर विस्तार से चर्चा किया। साथ ही उन्होंने बताया कि तत्तकालीन समय में भारत के समक्ष जो समस्याएं और चुनौतियां अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उभरकर सामने आयी थी, तत्कालीन नेतृत्व ने 1971 में सोवियत संघ के साथ 20 वर्षीय द्विपक्षीय समझौते ने इस बात को प्रमाणित किया कि भारत एक गुटनिरपेक्ष देश है किन्तु इसकी नीतियां गतिशील है। इसके उपरान्त भारत विश्व परिदृश्य में अपने आप को एक सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में कामयाब हो सका था।

कार्यक्रम के अन्त में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक सप्ताह समारोह में पथ संचलन, वाद्य–दल, अग्निवीर, एन.सी.सी. तथा खेल के विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने वाले छात्र–छात्राओं को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग के प्रभारी डॉ. आर.पी.यादव तथा स्वागत विभाग के शिक्षक डॉ. शुभ्रान्शु शेखर सिंह ने किया एवं आभार ज्ञापन प्रो. परीक्षित सिंह, समन्वयक, आई.क्यू.ए.सी. ने किया। इस कार्यक्रम मे विभागीय शिक्षक विकास कुमार पाठक तथा छात्र–छात्राएं भी उपस्थित रहे।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी
सूचना एवं जनसम्पर्क